International Journal of Multidisciplinary Research and Development

International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 2; February 2017; Page No. 97-98

राधावल्लभ त्रिपाठी रचित लघुकथा ''एकं रूप्यकम्'' की समीक्षा

डॉ0 ज्वाला प्रसाद

सहायक कुलसचिव, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

छह लघुकथाओं के संग्रह 'स्मितरेखा' की पहली कथा एकं रूप्यकम् है। यह कथा लेखक ने अपने विद्यार्थीकाल में हिन्दी में लिखी थी जो 'एक रुपया' शीर्षक से 1971 में 'नई कहानियाँ' पत्रिका के मार्च मास के अङ्क में प्रकाशित भी हुई थी। 1975 ई. में यह कथा सागर विश्वविद्यालय के बी.ए. हिन्दी के पाठ्यक्रम में भी रखी गई। 1982 ई. में इस कहानी का संस्कृत रूप प्रयाग से प्रकाशित 'संस्कृत गद्यविहार' नामक पाठ्यपुस्तक में संकलित किया गया।

कथा की घटना तो बहुत ही सामान्य है। हर कोई अपने जीवन में कई बार ऐसी घटना का सामना करता है। कुछ तो इसे अत्यन्त सामान्य मानेंगे और उनका ध्यान इस पर टिकेगा ही नहीं। कुछ का ध्यान तो जायेगा पर वे त्वरित उससे अपना ध्यान हटा, उसे भुला देंगे। किन्तु इस कथा के जन्म के मूल में समकालीन लेखकीय युगबोध है। प्रायः लोग कभी-कभी किसी वृद्ध या गरीब व्यक्ति को कष्ट में देख कर कुछ सहायता करना तो चाहते हैं पर फिर कुछ सोच कर उससे विरत हो जाते हैं या क्रियाशील होने में इतना विलम्ब कर देते हैं कि वह अवसर ही हाथ से निकल जाता है। पर उसके लिए वे अपने आपको माफ नहीं कर पाते। सोचते हैं कि अगर थोड़ी सी सहायता की होती तो कोई जरूरतमंद बहुत बड़ी मुसीबत से बच सकता था। व्यक्ति के समय से सहायता न कर पाने में अनेक कारण होते हैं। वे या तो कभी सोचते हैं कि इस दुनिया में अनेक लोग ऐसे हैं, किस-किस की सहायता कर पायेंगे या हम ही क्यों और भी तो लोग हैं या फिर हम कुछ करेंगे तो लोग सोचेंगे कि दिखावा कर रहा है अथवा कभी-कभी यह भी लगता है कि मदद मांगने वाला या मुसीबत में फंसा आदमी अपने लाभ के लिए झूठ तो नहीं बोल रहा है। संवेदनशील होते हुए भी व्यक्ति इसी उहापोह में रह जाता है और अवसर हाथ से निकल जाता है। उसके बाद उसे मदद न करने का सिर्फ और सिर्फ पछतावा मात्र ही रह जाता है।

कथा में लेखक की ऐसी बस-यात्रा का चित्रण है जिसमें एक वृद्ध यात्री को सिर्फ इसीलिये बस से उतरने पर विवश होना पड़ता है कि उसके पास निर्धारित किराये में से मात्र एक रुपया कम है। यहाँ एक रुपये की कमी होने के कारण कोई वृद्ध अपने गन्तव्य पर नहीं पहुँच पाता और कंडक्टर सहित सभी सहयात्री वृद्ध पर अविश्वास व्यक्त करते हुये इस घटना को न्यायोचित बताते हैं। वृद्ध को हुई निराशा और अन्य यात्रियों को प्राप्त सन्तोष यह विरोधाभास स्थिति लेखक के मन को झकझोरती है।

यहाँ एक तरफ चारों ओर व्याप्त झूठ है और बेइमानी की गहरी जड़ों से सम्पृक्त युगबोध जिसके प्रभाव में कंडक्टर और अन्य सहयात्री उस बेचारे वृद्ध की सहायता नहीं करते हैं तो दूसरी ओर है लेखक का अन्तर्मन जो संकेत है आज भी उन मूल्यों की उपस्थिति का जिन पर एक भावनामय संसार टिका है।

कथानक

वस्तुतः यह कथा लेखक का स्वयं का अनुभव है जो उसने बी.ए. उत्तीर्ण कर एम.ए. में प्रवेश लेने के लिए छतरपुर से सागर जाने वाली बस में प्राप्त किया क्योंकि कथा समाप्ति पर लेखक ने कहा है कि "इस कथा के लेखन के बाद बीते प्रायः चालीस वर्षों बाद भी उस वृद्ध का चित्र आज भी मन में टङ्कित है।"[1]

सर्वप्रथम लेखक गर्मी से त्रस्त स्वयं और बस की भीड़ का वर्णन करते हुए व्यवस्था को दोष देते नागरिकों को प्रदर्शित करता है। परिचालक के व्यवहार का सजीव चित्रण करता है। उसके बाद खड़े हुए मनुष्यों को अनेक प्रकार से सीट पर बैठाने के प्रयासों को प्रदर्शित एक वृद्ध जो कि खड़ा है उसे लेखक की सीट पर बैठना चाहता है।

लेखक पार्श्ववर्ती को कहकर उसे बैठाता है। वृद्ध को सागर तक जाना है, जहाँ तक का किराया 11.40 रु. है। किन्तु वृद्ध अपनी पूर्व यात्रा को ध्यान में रखकर केवल 10.40 रु. ही साथ लाया है। परिचालक के कहने पर वह 10.40 रु. निकालता है किन्तु वह 11.40 रु. के लिए आग्रह करता है। लेखक का मन कहता है कि वह वृद्ध को एक रुपया की सहायता करे किन्तु कितनों की और कब तक सहायता? ऐसे द्वन्द्व में उलझकर कुछ नहीं देता। लेखक पार्श्ववर्ती उस वृद्ध को अपशब्द बोलता है। जब वृद्ध पूरे पैसे नहीं दे पाता तो परिचालक बस रुकवाकर वृद्ध को नीचे उतार देता है, वह दीन मुद्रा में उतर जाता है, लेखक का मन कचोटता है, कि वह उसे एक रुपये की सहायता करे किन्तु तब तक बस चल देती है। लेखक का मन चीत्कार कर उठता है, वह निरन्तर दूर होते वृद्ध की छाया देखता रहता है और उसे आज तक भूला नहीं पाया है।

भाषाशैली

राधावल्लभ त्रिपाठी ने इस लघुकथा में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया है। इसमें प्रयुक्त शब्द सरल है, कथा की सरलता के अनुसार ही वाक्य, रचना एवं उसमें शब्दों का समावेश किया गया है। इस प्रकार लेखक ने इस लघुकथा में वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है। लेखक

जिस स्थिति का वर्णन करता है उसे सजीव कर देता है। वह छोटे-छोटे व्यवहारों का भी अत्यन्त सूक्ष्म वर्णन करता है। वृद्ध को बैठाने के लिए जब परिचालक ने कहा तो बैठे व्यक्ति के प्रतिरोध करने पर परिचालक कहता है- 'अस्तु अस्तु, तिष्ठतु अयं वृद्धस्तत्रैव' [2] लेखक गर्मी और बस के देरी होने से दु:खी मन में चालक परिचालक को धिक्कारता है- 'अहो अनयो: शाठ्यं वाहन चालक-परिचालकयो:। सर्वथा तापेन भर्जितेष्वस्मासु एतौ चालयिष्यतो यानम्।' [3] वह समीपवर्ती गाँव में जाने वालों से टिकट न देकर रुपये जेब में रखने की परिचालक की मानसिकता का वर्णन करता है। [4]

रस

इस कथा का अङ्गीरस करुण को माना जा सकता है क्योंकि जिस एक रुपया के लिए कहानी को लिखा गया है वह अन्त में एक रुपया न होने के कारण वृद्ध को बस से उतारना और लेखक का उसकी सहायता न कर पाना सहृदय को करुण रस में डुबा देता है-

ममान्त:करणात् कोऽपि चीत्कृत्य अवादीत्- 'अधुनाऽपि समर्पय तस्मै तपस्विने रूप्यकमेकम्। अतथात्वे स वराको यात्रां विधातुं शक्नुयान्न वा, सागरगमनं यथा तवेप्सितं तथैव तस्यापि।' [5]

इन सबके साथ इस कथा में चालकादि के प्रति द्रोह का भाव, पार्श्ववर्त्ती पुरुष के वृद्ध को बुरा-भला कहने पर उसके प्रति विवशता मिश्रित क्रोध के भाव आदि स्थान-स्थान पर देखने को मिलते हैं।

अलङ्कार

जब कवि कुछ लिखता है, तो अलङ्कार वस्तु में स्वयं अनुस्यूत हो जाते हैं। कतिपय अलङ्कार द्रष्टव्य है-

उत्प्रेक्षा

अनेनोपकारभारेणावनत इव सङ्कोचेन ग्लपित इवासनस्यैककोणे उपाविशदसौ वृद्ध:। [6]

स्वभावोक्ति

जैसे परिचालक के अधिक्षेप वचन अयि भो:, किं ब्रवीषि पञ्चवर्षकल्पा बालिका द्विवर्षीया प्रतिपाद्यते, अयं चतुर्दशवर्षीय: स्याद् डिम्भ: यदि विवाह: क्रियेतास्य तर्हि नवमासाभ्यन्तरमेव सन्ततिमुत्पादयेदयम्, अर्धं यात्रापत्रं तु ग्राह्यमेवास्य कृते। [7]

अतिशयोक्ति

यात्रा-पत्र (टिकट) का मूल्य बढ़ने के कारण पर विचार करते हुए लेखक कहता है- 'नासौ जानाति यत् प्रतिवर्षं वित्तमन्त्रिण: लेखन्या: स्पर्शमात्रेण यात्रापत्रराशिषु वृद्धिर्भवितुमर्हति।' [6]

काल

कथा के आरम्भ में ही लेखक ने गर्मी के मौसम का स्वाभाविक वर्णन किया है। जैसे- 'स्वेदस्य धारा वदनात् च्योतन्ति स्म। अन्तरङ्गिका स्वेदेन क्लिन्ना पृष्ठेन वक्षसा च संसक्ता अभवत्। कञ्चुकोऽपि उभयो पार्श्वयो: सुदूरं स्वेदाञ्चित:।' [9]

सन्दर्भ ग्रर्थ

1. क्षेपकम्- अस्या: कथाया: लेखनात् परम् अतीता: प्रायश: चत्वारिंशत् वर्षा:। वृद्धस्य तस्य चित्रम् इदानीमपि चित्तफलके में टङ्कितम्। - स्मितरेखा, पृ. 6
2. स्मितरेखा, पृ. 2
3. स्मितरेखा, पृ. 2
4. अहो गृध्नुता यत् परस्परेण मन्त्रणया परिवहननिगमकर्मचारिभि: सम अभिसन्धिना चेतादृशा: चालक-परिचालका निकटस्थग्रामान् प्रति जिगमिपून् बहून् जनान् यात्रापत्रं विनाव वसयाने प्रवेशयन्ति, तेभ्यश्च यात्रापत्रराशिमादाय स्वकुक्षौ तं निक्षिपत्ति। - स्मितरेखा, पृ. 3
5. स्मितरेखा, पृ. 5
6. स्मितरेखा, पृ. 3
7. स्मितरेखा, पृ. 3
8. स्मितरेखा, पृ. 4
9. स्मितरेखा, पृ. 1